P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के संबंध में नैतिकतार्किकता का अध्ययन

दिलीप कुमार झा
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा, भारत

सारांश

भारत की संस्कृति एवं 'संस्कृत' से अनभिज्ञ तथा भौतिक विज्ञानों की कुछ सीमित उपलब्धियों से चकाचौंध कुछ विद्वानों ने तो मूल्यों के अर्थ बोध को भी प्रदूषित कर दिया है तथा जानबूझकर 'प्रविधि' को 'मूल्य' के ऊपर प्रतिष्ठित कर दिया है। मानव मूल्य सूची मानवता को एक साझा पूँजी है और एक ऐसी अनवरत यात्रा है जो काल के पड़ावों को पूरा करके निरंतर आगे बढ़ती रहती है। धर्म हो कला हो अथवा संस्कृति, सबके लिए यह एक अन्तस्सलिला का कार्य करती है। विश्व की मुख्य विचारधाराएँ, दार्शनिक चिन्तन और साहित्यिक कृतिया इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। इसे पाकर व्यक्तित्व में चमक आती है, इतिहास को प्रमाणिकता मिलती है। यह इन्सानियत और हैवानियत के बीच की एक विभाजक रेखा है। जो समाज नैतिकता से जितना दूर है, मानवता एवं इन्सानियत से भी वह उतना ही दूर है। अनेकों युगाब्दों एवं शताब्दियों के व्यतीत होने पर भी राष्ट्र आज कहीं न कहीं आध्यात्मिक एवं भौतिक श्रेष्ठता का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है।

मुख्य शब्द : नैतिक तार्किकता, व्यक्तित्व, संस्कृत विद्यालय, छात्र एवं छात्राएं।

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज शान्ति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए एक विशिष्ट आचार–पद्धति निर्धारित करता है। समूचे समाज द्वारा स्वीकृत यह विशिष्ट आचार–पद्धति धीरे–धीरे एक सुस्पष्ट एवं सुनिश्चित व्यवस्था का रूप धारण कर लेती है। तब इसे मानवमूल्य की संज्ञा दी जाती है। मूल्य का शाब्दिक अर्थ है– उपयोगिता, वांञ्छनीयता, महत्व। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है उन्हे उस समाज के मूल्य कहते हैं। परन्तु भिन्न–भिन्न अनुशासनों में इन्हें भिन्न–भिन्न रूप में लिया गया है और अभी तक इनके विषय में कोई सर्वमान्य अवधारणा निश्चित नहीं हो सको है।

दर्शनशास्त्र में मनुष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। वेद मूलक दर्शनों के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है और चार्वाक तथा आजीवक दर्शनों के अनुसार – भौतिक सुख–भोग। भारतीय दार्शनिकों की दृष्टि से मोक्ष और भोग दो भिन्न मूल्य है तभी तो मोक्ष में विश्वास रखने वालों का व्यवहार परमार्थ केन्द्रित होता है और भोग में विश्वास रखने वालों का स्वार्थ केन्द्रित।

धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है। हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म के कुछ नैतिक नियम होते हैं आर मनुष्य को उनका पालन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना होता है। जब ये नियम मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करने लगते हैं तब ये उसके लिए मूल्य बन जाते हैं। उदाहरण के लिए जैन धर्म को लीजिए। जैन धर्म में अहिंसा को सर्वप्रमुख नैतिक नियम माना गया है। जन धर्म के अनुयायियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कर्म के सभी क्षेत्रों में इस नियम का पालन करें। उनके लिए अहिंसा सर्वप्रमुख मूल्य है।

मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि से संस्कृति और मूल्य अभिन्न होते हैं, कोई भी संस्कृति अपनी मूल्यों से ही पहचानी जाती है। उदाहरण के लिए हिन्दू संस्कृति को लीजिए। यह चार पुरूषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) पाँच महाव्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रहाचर्य) की संस्कृति है। सामान्यतः इन्ही के आधार पर हिन्दू

समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित होता है। अतः ये ही हिन्दू समाज के मूल्य हैं।

इस युग में मूल्यों पर सबसे अधिक चिन्तन मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों अभिवृत्तियों और पसन्दों के रूप में लिया है। हम जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्व देते हैं ओर जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वह ही हमारे लिए मूल्य होते हैं।

अब यदि हम मूल्यों के सन्दर्भ में दार्शनिकों, धर्मशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोणों पर समग्र रूप से विचार करे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि हर समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। उसके कुछ विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड होते हैं और समाज के व्यक्ति इनको अपनी पसंद के अनुसार महत्व देते हैं और इस महत्व के आधार पर उनका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है। इस प्रकार किसी समाज के विश्वास, आदश, सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड अपने में मूल्य नहीं होते अपितु जब इन्हें समाज के व्यक्तियों द्वारा महत्व प्राप्त होता है और उनसे व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है तब ये उनके मूल्य कहलाते हैं।

नैतिकतार्किकता

नैतिकतार्किकता का विकास एक प्रक्रिया है यहॉ व्यक्ति उचित और अनुचित का निर्णय अपने चेतन स्तर पर लेता है। बच्चा जन्म के समय नैतिक विहीन ही होता है। व्यक्ति की नैतिकतार्किकता किसी भी परिस्थिति में विभिन्न विकल्पों में से एक का चयन करना नैतिकतार्किकता के स्वरूप को दर्शाता है। यह नैतिकतार्किकता दस सार्वभौमिक नैतिक मूल्य पर आधारित होता है जो नैतिकदुविधा से संबद्ध होता है। 1. दण्ड, 2. सम्पत्ति, 3. स्वस्नेहपात्र के प्रति निर्णय, 4. अधिकार के प्रति निर्णय, 5. कानून व्यवस्था, 6. जीवन, 7. स्वतंत्रता, 8. न्याय, 9. सत्य, 10. लिंग।

नैतिक तर्क मूल्य आधारित वह तर्क है जो नैतिक दुविधा से बाहर निकलने हेतु एक व्यक्ति संबंधित परिस्थिति पर लागू करता है। लारेन्स कोलवर्ग (1927–1987) के नैतिक विकास के छः चरण है जिन्हे आसानी से पहचाना जा सकता है। इन छः चरणों में से प्रत्येक चरण नैतिक दुविधाओं को सुलझाने अपने पूर्वचरण से अधिक परिपूर्ण है। प्योजे की तरह कोलवर्ग ने पाया कि नैतिक विकास कुछ चरणों में होता है कोलवर्ग ने पाया कि ये चरण सार्वभौतिक होते हैं। बच्चों के साथ बीस साल तक एक विशेष प्रकार क साक्षात्कार का प्रयोग करने के बाद कोलवर्ग इन निर्णयों पर पहुंचे।

कोलवर्ग के कार्य को जेम्स रेस्ट महोदय ने आगे बढ़ाया, जेम्स रेस्ट के अनुसार किसी विशेष परिस्थिति में जो नैतिक व्यवहार घटित होता है उसमें निम्नलिखित तत्व समाहित होते हैं।

1. इस प्रकार का व्यवहार जो अन्य व्यक्तियों के लिए हितकारी है।
2. सामाजिक मान्यता के अनुसार व्यवहार का नैतिक स्तर हो।
3. सामाजिक व्यवस्था का आत्मानुभूति करण।
4. आत्मग्लानि की भावना, न्याय के विषय में तर्क परहित का महत्व।

रेस्ट महोदय ने कोलवर्ग के छः आयामों के स्थान पर द्वितीय स्तर से प्रारंभ किया डी0 आई0टी0 के अनुसार यह आयाम निम्नलिखित हैं – 2,3,4,5ए, 5बी, 6, इसका कारण है कि कोई भी पन्द्रह वर्षीय छात्र नैतिकता के प्रथम स्तर पर नहीं होता है। इस लिए वह प्रथम स्तर को स्वीकार नहीं करते हैं। पॉचवे स्तर को दो भागों में विभाजित किया 5ए एवं 5बी। 5ए का अर्थ है – सामाजिकानुबन्धन सम्बद्ध एवं 5बी का अर्थ है – मानवता सम्बद्ध नैतिकता। डी का अर्थ है – निरर्थक एवं ए का अर्थ है – समाज विरोधी कथन।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि नैतिकतर्क मूल्य आधारित वह तर्क है जो नैतिक दुविधा से बाहर निकालने हेतु एक व्यक्ति संबंधित परिस्थिति पर लागू करता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यक्ति के भिन्न–भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपूर्व समायोजन की क्षमता निर्धारित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में व्यक्तित्व से अभिप्राय कैटल द्वारा निर्मित H.P.S.S. परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांक से है।

अध्ययन के उद्द□य

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

सामान्य उद्द□य

संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता के स्तर का अध्ययन करना।

वि□ाश्ट उद्द□य

1. संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता एवं व्यक्तित्व के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. संस्कृतविद्यालय के विविध आयुवर्ग के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

समस्या कथन

दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के संबंध में नैतिकतार्किकता का अध्ययन

पारिभाशिक भाब्दावली

नैतिकतार्किकता

नैतिकतार्किकता से अभिप्राय जेम्स रेस्ट मोनोसोटा विश्वविद्यालय अमेरिका द्वारा निर्मित डिफाईनिंग ईश्यूजटेस्ट द्वारा प्राप्तांक से है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व से अभिप्राय प्रो0 आर0बी0 कैरल द्वारा निर्मित एवं डॉ. एस0डी0 कपूर, एस0एस0 श्रीवास्तव एवं जी0एन0पी0 श्रीवास्तव द्वारा अनुदित हाईस्कूल व्यक्तित्व मापनी द्वारा (H.S.P.S.) प्राप्त प्राप्तांक से है।

संस्कृत विद्यालय

संस्कृत विद्यालय से अभिप्राय ऐसे विद्यालय से है जिनके अध्ययन–अध्यापन की भाषा संस्कृत भाषा है।

भाोध का सीमांकन

शोधकार्य में समस्याओं के विभिन्न तत्वों के विश्लेषणोपरांत उसकी सीमा निर्धारित की जाती है क्योंकि शोधसमस्या सामान्य रूप से व्यापक होती है। प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है :–

1. सम्पूर्ण संस्कृत विद्यालय के स्थान पर केवल दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. सभी कक्षा के छात्रों के स्थान पर केवल उपशास्त्री कक्षा (10+2) के छात्र एवं छात्रा को लिया गया।
3. न्यादर्श के रूप में केवल 400 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया।
4. नैतिकतार्किकता के अध्ययन के लिए जेम्स रेस्ट द्वारा निर्मित 'डिफाईनिंग ईश्यूजटैस्ट' का प्रयोग किया गया।

साहित्यावलोकन

1. प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित पूर्व में कुछ शोधकार्य किये गये है जो निम्नलिखित है:–
2. चौधरी विपाशा 2008 ने दिल्ली स्थित विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतार्किकता का अध्ययन शोध में पाया कि व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण नैतिकतार्किकता को प्रभावित करती है।
3. कुमार नरेन्द्र–2010 ने जिला बहादुगढ़, हरियाणा के छात्र–छात्राओं क नैतिकमूल्य एवं नैतिकतर्क का अध्ययन किया और पाया कि छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्य एवं नैतिकतर्क के संबंध में विचार अलग–अलग हैं।
4. विजय लक्ष्मी –2012 ने दिल्ली के तीन विद्यालयों के छात्र–छात्राओं पर नैतिकतार्किकता का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों का व्यवहार छात्रो के नैतिक मूल्य एवं नैतिक तर्क को प्रभावित करता है।
5. वन्दना –2014 ने विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतार्किकता एवं नैतिक मूल्य का अध्ययन किया और पाया कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर अधिक होता है।
6. भारद्वाज संजय–2015 ने व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता का अध्ययन शोध में पाया कि पारिवारिक वातावरण नैतिकतार्किकता को प्रभावित करती है।
7. उपाध्याय एस0आर0–2016 ने बुद्धि एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नतिकतर्क का अध्ययन शोधकार्य में पाया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की नैतिकतर्क पारिवारिक वातावरण से अधिक प्रभावित हुई है।

न्याद□ा चयन

प्रस्तुत शोधकार्य में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा दो स्तरों पर न्यादर्श चयन किया गया प्रथम स्तर पर दिल्ली में संचालित संस्कृत विद्यालयों में से 20 विद्यालयों का चयन किया गया तथा दूसरे स्तर पर संस्कृत विद्यालय के उपशास्त्री (ग्यारहवी, बारहवी) कक्षा में उपस्थित सभी छात्र–छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। प्रथम दिन सभी छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता से संबंधित प्रश्नावली एवं दूसरे दिन अन्य प्रश्नावली दी गयी। इस प्रकार बीस विद्यालयों में 420 छात्र एवं छात्राओं को प्रश्नावली दी गयी जिसमें 400 प्रश्नावली पूर्णरूप से शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से भरी हुई थी।

भाोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोधकार्य में शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है जो निम्नलिखित है :–

1. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के प्रथम आयाम एकाकी बनाम उत्साही के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
2. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के द्वितीय आयाम अल्पज्ञ बनाम बहुज्ञ के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
3. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के तृतीय आयाम संवेगात्मक बनाम स्थिर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
4. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के चतुर्थ आयाम निष्क्रिय बनाम सक्रिय के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
5. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के पंचम आयाम नम्र बनाम दृढ़ के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
6. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के षष्ठ आयाम सौम्य बनाम प्रशन्नचित्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
7. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के सप्तम आयाम सांसारिक बनाम आध्यात्मिक के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
8. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के अष्टम आयाम संकोची बनाम सामाजिक के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
9. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के नवम आयाम निष्ठुर बनाम संवेदनशील के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

10. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के दशम आयाम समूहवादी बनाम व्यक्तिवादी के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
11. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के एकादश आयाम आत्मविश्वासी बनाम चिन्तित के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
12. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के द्वादश आयाम समूहनियंत्रित बनाम स्वपर्याप्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
13. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के त्रयोदश आयाम अन्तर्द्वन्द्व बनाम नियन्त्रित के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
14. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के चतुर्दश आयाम चिन्तामुक्त बनाम चिन्तायुक्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में चार प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। उसमें तीन उपकरण मानकीकृत परीक्षण एवं एक शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित है। प्रस्तुत अनुसंधान काय में प्रयुक्त उपकरण निम्नलिखित है :–

1. मोनोसोटा विश्वविद्यालय अमेरिका के प्रोफेसर जेम्स रेस्ट द्वारा निर्मित डिफाईनिंग ईश्यूज टेस्ट का नैतिकतार्किकता स्तर के मापन हेतु प्रयोग किया गया।
2. व्यक्तित्व मापन हेतु कैटल द्वारा निर्मित (H.S.P.S.) परीक्षण का डॉ0 एस0डी0 कपूर, एस0एस0 श्रीवास्तव एवं जी0एन0पी0 श्रीवास्तव द्वारा अनुदित ''हाईस्कूल व्यक्तित्व मापनी'' का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जिन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है वे निम्नलिखित हैं :–

मध्यमान (MEAN)

$$\sum \frac{FX}{N}$$

मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)

$$\text{S.D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - (\sum \frac{Fd}{N})^2} \quad x\, I$$

सहसम्बन्ध (CORRELATION)

$$r = \frac{\sum X^1 Y^1}{N} - \frac{CYx\ CY}{QY\ X\ QX}$$

परिणाम एवं व्याख्या

1. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के प्रथम आयाम एकाकी बनाम उत्साही के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.045) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक नहीं हैं।
2. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के द्वितीय आयाम अल्पज्ञ बनाम बहुज्ञ के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.106) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
3. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के तृतीय आयाम संवेगात्मक बनाम स्थिर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.099) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
4. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के चतुर्थ आयाम निष्क्रिय बनाम सक्रिय के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.189) .01 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
5. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के पंचम आयाम नम्र बनाम दृढ़ के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.053) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
6. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के षष्ठ आयाम सौम्य बनाम प्रशन्नचित्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.047) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक नहीं हैं।
7. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकताकिकता स्तर एवं व्यक्तित्व के सप्तम आयाम सांसारिक बनाम आध्यात्मिक के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.166) .01 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
8. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के अष्टम आयाम संकोची बनाम सामाजिक के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.132) .01 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
9. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के नवम आयाम निष्ठुर बनाम संवेदनशील के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.037) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक नहीं हैं।
10. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के दशम आयाम समूहवादी बनाम व्यक्तिवादी के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.099) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
11. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के एकादश आयाम आत्मविश्वासी बनाम चिन्तित के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.184) .01 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
12. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के द्वादश आयाम समूहनियंत्रित बनाम स्वपर्याप्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.099) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।

13. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के त्रयोदश आयाम अन्तर्द्वन्द्व बनाम नियन्त्रित के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.198) .01 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।
14. संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राआ के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के चतुर्दश आयाम चिन्तामुक्त बनाम चिन्तायुक्त के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। (r=0.093) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक हैं।

निश्कर्श

1. उत्साह व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा नहीं होता है।
2. बहुज्ञ व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
3. स्थिर व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
4. सक्रिय व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
5. दृढ़ व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा नहीं होता है।
6. प्रशन्नचित्त व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा नहीं होता है।
7. आध्यात्मिक व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
8. सामाजिक व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
9. संवेदनशील व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा नहीं होता है।
10. व्यक्तिवादी व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
11. आत्मविश्वासी व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
12. स्वपर्याप्त व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
13. नियन्त्रित व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।
14. चिन्तामुक्त व्यक्तित्व गुणों से युक्त छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर अच्छा होता है।

प्राचीनकाल का गौरवमयी इतिहास जो हमारी धरोहर है, हमे विश्व की प्राचीन संस्कृति का दर्जा देते हैं। हमारे उपनिषदों ने हमें '' बसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात सारा संसार मेरा परिवार है, सिखाया है। इसके बाबजूद हम कभी धर्म, कभी क्षेत्र जाति व यहाँ तक की भाषा के नाम पर लड़ते हैं मन्दिर–मस्जिद व अन्य धार्मिक स्थान, गरीबी, महामारी, बेरोजगारी सामाजिक अन्याय व अकाल से भी बड़े मुद्द है। सम्पूर्ण विश्व आज हिंसा एवं आतंकवाद की विभीषिका से जल रहा है। ऐसे में शांति व सदभाव की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। विश्व का कोई ऐसा देश नहीं है जो भय, भूख वैमनस्य एवं पर्यावरण संकट की पीड़ा को न झेल रहा हो। अतः ऐसे मे मानव बनना और मानवमूल्य आधारित शिक्षा के लिए आवाज उठाना शांति की दिशा में एक पग माना जा सकता है। आज विकासशील भारत से विकसित भारत में तब्दील होने के लिए लोगों में मानवमूल्यों के साथ ही नैतिक मूल्यों का सृजन किया जाना परमावश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, जे. सी. – शैक्षिक शोध का परिचय, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1995
आर्य, सुमित्रा – किशोरावस्था में नैतिक मूल्य, क्लासिक पब्लिकेशन
ऐडा जोसेपा, ए. बोटिस्टा– वेल्यू एजूकेशन इन रिलिजिएन्स एजूकेशन
भारती, विजय – वेल्यू ओरियन्ट एजूकेशन, नील कमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
वेस्ट जॉन डब्ल्यू – शिक्षा में शोध सातवाँ संस्करण, प्रिंटिग हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2004
बैक,सी –वैल्यूज एवं लिविंग, ओ. आई. एस. ई. प्रेस, टोरेन्टो, 1983
भारत, धमवीर – मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1972
भारद्वाज, तिलक राज – मानवीय मूल्यों की शिक्षा, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001
चिट्टेवाबू, एस. वी. – वैल्यू ओरियन्टेशन ऑफ एज्यूकेशन यूनिवर्सिटी न्यूज, 8 मई, 1997
चक्रवर्ती, मोहित – वेल्यू एजूकेशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997
चिताग्र, एम. जी. – एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वेल्यू, ए. पी. एच. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2003
देवी, लक्ष्मी –''एज्यूकेशन वेल्यू'', अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली
डागर, वी. एस. एंड धुल इंदिरा – ए केस फॉर वैल्यू ओरियन्टेड एज्यूकेशन, यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल्यूम–35, न. 29, पृष्ठ 21, 1997
ई.एन. गावण्डे – वेल्यू ऑरेन्टेड एजूकेशन, 2004
गाँधी, एम. के. – मोरल एज्यूकेशन, ए. पी. एच. पब्लिकेशन कॉरपोरेशन, न्यू देहली
गुप्त, नत्थूलाल – मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
गांवडे, इ. एन. – मूल्य शिक्षा बुक एनक्लेव, जयपुर, 2003
गुप्त, नत्थूलाल – मूल्यपरक शिक्षा पद्धति, जयकृष्ण अग्रवाल महात्मा गाँधी मार्ग, अजमेर, 1987
गुप्त, नत्थूलाल – मानव मूल्यों की खोज, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, 1986
गैरेट, ई हैनरी – शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010
गाँधी के.एल.एन. – वेल्यू एज्यूकेशन, ज्ञान प्रकाशन, न्यू देहली, 1993
गोयल, वी. आर. –डॉक्यूमेंट ऑन सोशल मोरल एंड स्प्रचुअल वैल्यूज इन एज्यूकेशन, न्यू देहली, एन. सी.ई.आर.टी. देहली, 1979
घोव, ए. के. – मोरल एज्यूकेशन यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल्यूम–35, पृष्ठ 13–14, 1997

जॉन हेलडेन – वेल्यू एजूकेशन एण्ड द ह्यूमन वर्ल्ड, 2004

कोठारी, डी. एस. – कल्टीवेशन ऑफ मोरल वैल्यूज, कोठारी आयोग रिपोर्ट, 1996

कोठारी, डी. एस. – एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वैल्यूज, टीचर्स टुडे, जुलाई, 1985

कार, एन. एन. –वैल्य् एज्यूकेशन ए फिलॉसफिकल स्टडी, द एसोसियट पब्लिशर्स 2963/2 कच्चा बाजार, अम्बाला कैन्ट

कुमार, अनिल – रिसर्च मेथडोलॉजी ऑफ एजूकेशन, अल्फा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009

मोहन्ती, जगन्नाथ – इंडियन एज्यूकेशन इन द इमर्जिंग सोसायटी, स्टरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1996

मोदी, विकास–नैतिक मूल्य और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

चित्तकारा, एम. जी.–एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वैल्यूज, ए. पी. एच. प्राइवेट कॉरपोरेशन, नई दिल्ली

माट्टी हायरे – द फ्यचू र ऑफ वेल्यू इंक्वाइरी

एन. अमरसवरण – मोरल वैल्यूज ऑफ इंटरमिडिएट स्टूडेन्ट, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देहली

एन. वैंकटनाथ, एन. संध्या–रिसर्च इन वेल्यू एजूकेशन

एन. वेंकटर – वेल्यू एजूकेशन

निकोला ब्रिस, रिचर्ड – एस. पी. एस. एस. फॉर साइक्लोजीस्ट ए गाइड टू डाटा एनालिसिस यूजिंग एस.पी.एस.एस फॉर विन्डोज, 2010